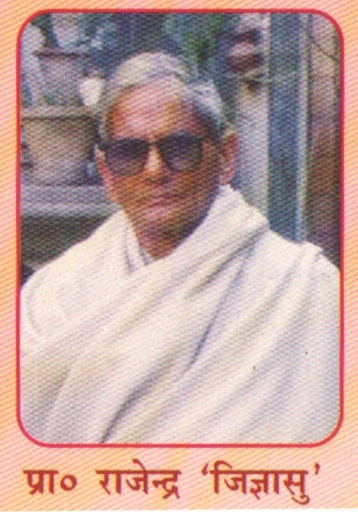
**ओ३म्**

**“वयोवृद्ध यशस्वी ऋषि-भक्त आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी**

**को उनके 86 वें जन्म दिवस की बधाई और शुभकामनायें”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 ऋषिभक्त यशस्वी आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी का आज 86 वां जन्म दिवस है। इस अवसर पर हम श्रद्धेय जिज्ञासु जी को अपनी हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई देते हैं। ईश्वर की कृपा से आप सुदीर्घकाल तक पूर्ण स्वस्थ रहकर आर्यसमाज की साहित्यिक सेवा हित अपने उपदेशों से भी आर्यसमाज का मार्गदर्शन करते रहें, यह प्रार्थना करते हैं। श्री जिज्ञासु जी का जन्म 28 मई सन् 1931 को जिला स्यालकोट (पश्चिमी पंजाब) के ग्राम मालोमहे में हुआ था। श्री जीवनमल जी आपके पिताश्री थे और श्रीमती हरदेवी जी आपकी माता जी थी। यह बता दें की यह जन्म तिथि जिज्ञासु जी के स्कूल के रिकार्ड के अनुसार है।

जिज्ञासु जी को आर्यसमाज में अपने लेखन कार्यों के कारण प्रसिद्धि मिली है। आप पं0 गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और स्वामी सर्वानन्द जी आदि अनेक विद्वान महात्माओं के निकट सम्पर्क में रहें हैं। इन सभी महापुरुषों के जीवन चरित्र भी आपने लिखे हैं। आपने आर्यसमाज में आर्य महात्माओं वा महापुरुषों के जीवन चरित्र लिखकर एक इतिहास बनाया है। हमारा अनुमान है गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड या ऐसी किसी संस्था में आपका नाम तीन सौ से अधिक पुस्तकें लिखने के कारण दर्ज है। यह कीर्तिमान आर्यसमाज के किसी पूर्व व वर्तमान विद्वान द्वारा नहीं बनाया जा सका। आपका एक गुण यह भी है कि आप उर्दू, फारसी व कुछ अरबी एवं हिन्दी-अंग्रेजी-पंजाबी आदि भाषाओं के जानकार हैं। उर्दू में लिखा गया आर्यसमाज का समस्त साहित्य आपके दृष्टिगोचर हुआ है व आपने वह सब पढ़ा है। पुरानी पत्र पत्रिकाओं जिनका नाम अब केवल आर्यसमाज की पुस्तकों में इतिहास के रूप में ही मिलता है, उनकी भी फाइलें आपके साहित्य संग्रह में विद्यमान है। हुतात्मा धर्मवीर पं. लेखराम जी पर आपने छोटे बड़े अनेक जीवन चरित्र लिखे हैं। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज ग्रन्थावली, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पं. चमूपति जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, पं. भगवद्दत्त जी, रिसर्च स्कालर, पं. शान्ति प्रकाश जी, पं. रामचन्द्र देहलवी, मेहता जैमिनी, लौह पुरुष पं. नरेन्द्र, हैदराबाद, महाशय गोविन्दराम जी, स्वामी अमर स्वामी जी आदि अनेक आर्य महापुरुषों के जीवन चरित आपने लिखे हैं।

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ग्रन्थावली का भी चार वृहद खण्डों में सम्पादन व प्रकाशन किया है। पं. लक्ष्मण आर्य जी ने ऋषि दयानन्द जी का उर्दू में वृहद जीवन चरित्र लिखा था। जिसका हिन्दी में अनुवाद कर आपने दो खण्डों में प्रकाशन कराया है। अन्य अनेक विषयों के भी छोटे-बड़े ग्रन्थ आपने लिखे हैं। परोपकारी मासिक में आपकी लेख श्रृंखला ‘कुछ तड़फ कुछ झड़फ’ के नाम से वर्षों से प्रकाशित होती आ रही है। डा. धर्मवीर, प्रधान, परोपकारिणी सभा के जीवन पर भी आप एक वृहद ग्रन्थ लिख रहे हैं। हमें आशा है कि यह ग्रन्थ या तो आपने पूर्ण कर लिया होगा या पूरा होने वाला होगा। 86 वर्ष की आयु में भी आपके अन्दर युवकों जैसा जोश व उत्साह है जिससे आर्यसमाज के युवा व अधिक आयु के लोगों को प्रेरणा मिलती है। आप का अधिकाश समय साहित्यिक अनुसंधान व लेखन कार्यों में व्यतीत होता है। आपने साहित्यिक खोज एवं प्रचार के लिए देश के अनेक दूरस्थ एवं दुर्गम स्थानों की यात्रायें भी की हैं। हमें आशा है कि आपके द्वारा वर्तमान एवं भविष्य में भी प्रचुर साहित्य के सम्पादन व प्रकाशन से साहित्य प्रेमियों को प्राप्त होगा। हमने जीवन में अनेक बार आपके दर्शन किये हैं और आपके ओजस्वी विचारों को सुना है। आर्यसमाज नयाबांस, दिल्ली, हिण्डोन सिटी में वर्ष 1997 में मनाई गई धर्मवीर पं. लेखराम जी के बलिदान शताब्दी समारोह, कादियां में सन् 1997 में मनाई गई हुतात्मा पं. लेखराम जी के बलिदान शताब्दी समारोह, परोपकारिणी सभा द्वारा सन् 2016 में आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर आपके दर्शन करने का हमें सौभाग्य मिला है। सन् 1970-74 में आर्यसमाज से जुड़ने के बाद से हम आपके लेख आर्यजगत की पत्र पत्रिकाओं में पढ़ते आ रहे हैं। इससे पूर्व भी हमने आपके जीवन पर कई बार लेख लिखे हैं। कुछ समय पूर्व ही हमें याद आया कि आज आपका जन्म दिवस है। उस समय हम जिज्ञासु जी के मित्र यशस्वी आर्य विद्वान श्री इन्द्रजित देव, यमुनानगर के साथ गुरुकुल पौंधा में थे। हम कुछ देर पहले वहां से चले और घर पहुंच कर आप पर कुछ शब्द लिखने की चेष्टा करने लगे जिसका परिणाम यह कुछ पंक्तियां हैं।

आपने पंजाब के एक आर्य सन्त पंडित रूलियाराम जी का एक लघु एवं महत्वपूर्ण जीवन चरित लिखा है। लगभग 20 वर्ष पूर्व इसके आधार पर लिखा हमारा एक लेख स्थानीय प्रमुख समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था। पं. रूलिया राम जी का जीवन आदर्श जीवन है जिसमें ऋषि और आर्यसमाज भक्ति सहित परसेवा एवं परोपकार के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं। सबसे प्रेरणादायक घटना यह है कि आपने एक प्लेग पीड़ित गांव के रोगी के गले की गांठ का छुरा या चाकू न मिलने पर अपने दांतों से ही आपरेशन अर्थात् उसे पंचर कर डाला था। उससे जो मवाद व पीप की पिचकारी निकली उससे आपका पूरा चेहरा भर गया था। मित्रों ने पूछा कि महाराज, आपने यह क्या किया? इससे आपका जीवन संकट में पड़ सकता है। इस पर आपने सन्तोष की सांस लेकर कहा था, मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। मेरा जीवन किसी के जीवन को बचाने में काम आ जाये, तो इससे बढ़कर इस नश्वर जीवन का और अच्छा उपयोग क्या हो सकता है? हम इस सन्त को और इनके जीवनी लेखक प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी को इस कार्य के लिए नमन करते हैं। महात्मा हंसराज जी भी पं. रूलियाराम जी के प्रशंसक थे। वह पंडित जी का जीवन चरित्र भी लिखना चाहते थे, परन्तु व्यस्ताओं आदि के कारण लिख न सके। इस जीवनी को पढ़कर और लेख को लिखकर हमें जो प्रसन्नता हुई थी, उसका हम वर्णन नहीं कर सकते। कभी अवसर हुआ तो उसे पाठकों के लिए अवश्य प्रस्तुत करेंगे।

हमने अपने जीवन में आपके व्यक्तित्व व कृतित्व से बहुत प्रेरणायें प्राप्त की हैं। हम आपके आभारी हैं। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि आप स्वस्थ रहें एवं सुदीर्घकाल तक ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की सेवा करते रहें। हम आपको आज जन्म दिवस के अवसर पर नमन करते हैं और अपनी हार्दिक शुभकामनायें देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**